

महासमुन्द जिले के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर आत्म- अवधारणा के प्रभाव का अध्ययन

¹सविता यादव, ²प्रो. डॉ. लुभावनी त्रिपाठी

¹शोधार्थी, शिक्षा संकाय कालिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

²प्रोफेसर, शिक्षा संकाय कालिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश: इस शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य महासमुन्द जिले के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर आत्म-अवधारणा के सांख्यिकीय प्रभाव का अध्ययन करना है। विश्लेषण उपलब्ध 100 विद्यार्थी-प्रविष्टियों पर आधारित है। इनमें 50 छात्र, 50 छात्राएँ, 50 शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी तथा 50 अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। पाँच विकासखंडों—महासमुन्द, बागबाहरा, पिथौरा, बसना और सरायपाली—से 20-20 प्रविष्टियों का समान वितरण रखा गया। आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा को 0 से 100 के संयुक्त प्राप्तांकों के रूप में दर्शाया गया है। विश्लेषण हेतु आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, कार्ल पियर्सन सहसंबंध तथा सरल रैखिक प्रतिगमन का प्रयोग किया गया। आत्म-अवधारणा का माध्य 67.48 एवं मानक विचलन 8.28 तथा शैक्षिक आकांक्षा का माध्य 74.47 एवं मानक विचलन 9.12 प्राप्त हुआ। आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा के मध्य उच्च धनात्मक संबंध प्राप्त हुआ, जिसका सहसंबंध गुणांक .729 और सार्थकता स्तर .001 से कम रहा। प्रतिगमन प्रतिमान सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया तथा आत्म-अवधारणा ने शैक्षिक आकांक्षा के प्रसरण का 53.16 प्रतिशत स्पष्ट किया। प्रतिगमन गुणांक .803 से ज्ञात हुआ कि आत्म-अवधारणा में एक इकाई वृद्धि के साथ शैक्षिक आकांक्षा के अनुमानित प्राप्तांक में लगभग .80 इकाई वृद्धि हुई। निष्कर्षतः अपनी योग्यता, अध्ययन-सामर्थ्य, सामाजिक स्वीकार्यता और भावी सफलता के प्रति सकारात्मक एवं यथार्थ धारणा रखने वाले विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक लक्ष्य विकसित होने की संभावना अधिक दिखाई देती है। चूँकि उपलब्ध आँकड़े पद्धति एवं सांख्यिकीय विश्लेषण के प्रदर्शन हेतु प्रयुक्त किए गए हैं, इसलिए उन्हें जिले की वास्तविक विद्यार्थी-जनसंख्या का प्रतिनिधि निष्कर्ष नहीं माना जाना चाहिए।

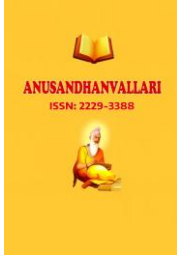
प्रमुख शब्द: आत्म-अवधारणा, शैक्षिक आकांक्षा, कक्षा 9, किशोरावस्था, शैक्षिक मनोविज्ञान, प्रतिगमन

1. प्रस्तावना

विद्यार्थी अपने बारे में जो विश्वास निर्मित करता है, वही उसके प्रयास, लक्ष्य और उपलब्ध अवसरों की व्याख्या को गहराई से प्रभावित करता है। समान योग्यता और समान विद्यालयी सुविधा प्राप्त दो विद्यार्थियों की शैक्षिक दिशा अलग हो सकती है, क्योंकि एक स्वयं को कठिन कार्य सीखने में सक्षम समझता है, जबकि दूसरा छोटी असफलता को अपनी स्थायी अक्षमता का प्रमाण मान लेता है। स्वयं के प्रति निर्मित यह संगठित धारणा आत्म-अवधारणा कहलाती है।

आत्म-अवधारणा में विद्यार्थी की शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक और बौद्धिक विशेषताओं के प्रति धारणा सम्मिलित होती है। शैक्षिक संदर्भ में विशेष रूप से यह विश्वास महत्वपूर्ण है कि वह सीख सकता है, कठिन विषयों पर प्रयास कर सकता है, उसके निर्णयों का मूल्य है और उसके लिए उच्च शिक्षा संभव है। सकारात्मक आत्म-अवधारणा का अर्थ अवास्तविक आत्म-प्रशंसा नहीं, बल्कि अपनी शक्तियों और सीमाओं की यथार्थ समझ के साथ विकास की संभावना में विश्वास है।

शैक्षिक आकांक्षा भविष्य में प्राप्त किए जाने वाले शैक्षिक स्तर और अवसरों के संबंध में विद्यार्थी की इच्छित दिशा है। आकांक्षा तब व्यवहार में बदलती है जब विद्यार्थी लक्ष्य को अपनी पहचान से जोड़ता है। यदि उच्च शिक्षा का लक्ष्य उसकी वर्तमान आत्म-छवि से असंगत प्रतीत होता है, तो वह उपलब्ध अवसरों के बावजूद लक्ष्य छोड़ सकता है। इसके विपरीत सकारात्मक शैक्षिक आत्म-अवधारणा लक्ष्य को मनोवैज्ञानिक रूप से संभव बनाती है और प्रयास, दृढ़ता तथा सहायता माँगने की तत्परता को बढ़ा सकती है।



कक्षा 9 में आत्म-अवधारणा विशेष रूप से संवेदनशील होती है, क्योंकि किशोर स्वयं की तुलना सहपाठियों से करते हैं, शिक्षकों की प्रतिक्रिया को अपनी क्षमता का संकेत मानते हैं और परीक्षा-प्रदर्शन से भावी संभावना का अनुमान लगाते हैं। इस अवस्था में निरंतर नकारात्मक वर्गीकरण, सार्वजनिक तुलना और केवल अंक-आधारित प्रशंसा आत्म-अवधारणा को संकुचित कर सकती है। दूसरी ओर कौशल-विशिष्ट प्रतिक्रिया, प्रगति की पहचान, सीखने के विकल्प और छोटे-छोटे सफल अनुभव आत्मविश्वास तथा आकांक्षा दोनों को सुदृढ़ कर सकते हैं।

महासमुन्द जिले में 2024-25 के दौरान उच्च विद्यालय स्तर पर शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों को मिलाकर 31,301 विद्यार्थी नामांकित थे। इतने व्यापक समूह में शैक्षिक आकांक्षा को समझने के लिए केवल बाहरी संसाधनों का अध्ययन पर्याप्त नहीं है; विद्यार्थी की आंतरिक आत्म-धारणा का परीक्षण भी आवश्यक है। वर्तमान शोध-पत्र उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा के संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यहाँ प्रभाव का आशय पूर्वानुमानात्मक सांख्यिकीय योगदान से है, प्रमाणित कारणात्मक प्रभाव से नहीं।

2. प्रमुख अवधारणाओं का मनोवैज्ञानिक आधार

2.1 आत्म-अवधारणा

आत्म-अवधारणा व्यक्ति द्वारा अपने गुणों, क्षमताओं, भूमिकाओं और सामाजिक स्थिति के संबंध में निर्मित अपेक्षाकृत संगठित ज्ञान-व्यवस्था है। यह अनुभव, उपलब्धि, दूसरों की प्रतिक्रिया और सामाजिक तुलना से विकसित होती है। आत्म-अवधारणा बहुआयामी है; विद्यार्थी किसी विषय में स्वयं को सक्षम और दूसरे में कमजोर समझ सकता है। इसलिए सामान्य आत्म-अवधारणा तथा शैक्षिक आत्म-अवधारणा में अंतर किया जाना चाहिए। वर्तमान संयुक्त प्राप्तांक व्यापक आत्म-अवधारणा का संकेतक है।

2.2 शैक्षिक आकांक्षा

शैक्षिक आकांक्षा विद्यार्थी के वांछित शैक्षिक भविष्य का संज्ञानात्मक और प्रेरक निरूपण है। इसमें आगे पढ़ने की इच्छा, प्राप्त किए जाने वाले स्तर की ऊँचाई, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, अवसरों की खोज और बाधाओं के बावजूद निरंतरता सम्मिलित है। आकांक्षा और अपेक्षा समान नहीं हैं; आकांक्षा वांछित लक्ष्य बताती है, जबकि अपेक्षा उस लक्ष्य के प्राप्त होने की अनुमानित संभावना बताती है।

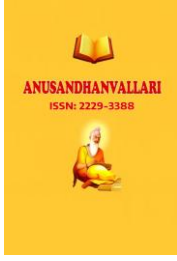
2.3 आत्म-अवधारणा से आकांक्षा तक संभावित प्रक्रिया

आत्म-अवधारणा लक्ष्य-चयन को कम से कम चार मार्गों से प्रभावित कर सकती है। प्रथम, यह विद्यार्थी को लक्ष्य की प्राप्ति-संभावना का अनुमान देती है। द्वितीय, यह कठिनाई के अर्थ को निर्धारित करती है—सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाला विद्यार्थी कठिनाई को सीखने की चुनौती मान सकता है, जबकि नकारात्मक आत्म-अवधारणा वाला इसे अक्षमता का प्रमाण समझ सकता है। तृतीय, यह सफलता और असफलता के कारणों की व्याख्या को प्रभावित करती है। चतुर्थ, यह सहायता माँगने, अवसरों की खोज और दीर्घकालीन प्रयास की तत्परता को आकार देती है।

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

अहमवारा और ह्यूस्टन (2007) ने 856 अंग्रेजी माध्यमिक विद्यार्थियों पर चयनात्मक विद्यालयी व्यवस्था, आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया। अध्ययन में आत्म-अवधारणा को किशोरों की उपलब्धि-आकांक्षा के प्रतिमान में महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक माना गया और यह स्पष्ट किया गया कि विद्यालयी संदर्भ तथा बुद्धि के बारे में धारणाएँ आकांक्षा से जुड़ती हैं।

मार्श और मार्टिन (2011) ने शैक्षिक आत्म-अवधारणा और उपलब्धि के संबंधों की व्यापक समीक्षा करते हुए पारस्परिक प्रभाव प्रतिमान का समर्थन किया। पूर्व आत्म-अवधारणा आगामी उपलब्धि पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकती है तथा



उपलब्धि भी आगे की आत्म-अवधारणा को बदलती है। यह पारस्परिकता बताती है कि आत्म-अवधारणा को स्थिर व्यक्तित्व-वर्गीकरण न मानकर परिवर्तनशील शैक्षिक संरचना समझना चाहिए।

बुचमान, ग्युटर और जुफियानो (2022) ने 9 से 15 वर्ष की आयु तक प्रतिनिधि स्विस नमूने में अभिभावकीय शैक्षिक आकांक्षा और बच्चों की शैक्षिक आत्म-अवधारणा का अनुवर्ती अध्ययन किया। समय-विशिष्ट पारस्परिक प्रभावों से ज्ञात हुआ कि सामान्य से अधिक अभिभावकीय आकांक्षा बाद में अधिक आत्म-अवधारणा से तथा सामान्य से अधिक आत्म-अवधारणा बाद की अभिभावकीय आकांक्षा से जुड़ी थी। परिणाम परिवार और विद्यार्थी की आत्म-धारणा के पारस्परिक संबंध को रेखांकित करते हैं।

सरकार (बाल) और मंडल (2024) ने हुगली जिले के 340 स्नातक विद्यार्थियों पर आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण, सरल यादृच्छिक नमूना तथा रैखिक प्रतिगमन के आधार पर दोनों चरों में सकारात्मक निर्भर संबंध पाया गया। यद्यपि नमूना उच्च शिक्षा स्तर का था, निष्कर्ष आत्म-अवधारणा की लक्ष्य-निर्माण भूमिका का समर्थन करता है।

सिंह और दुबे (2025) ने 200 स्नातक विद्यार्थियों पर आत्म-अवधारणा और आकांक्षा-स्तर के संबंध का परीक्षण किया। कार्ल पियर्सन सहसंबंध के आधार पर मजबूत धनात्मक संबंध प्राप्त हुआ। इससे संकेत मिलता है कि विद्यार्थी अपने बारे में जितनी सकारात्मक और सक्षम धारणा रखता है, उतनी ही ऊँची उपलब्धि तथा शिक्षा-संबंधी आकांक्षा विकसित कर सकता है।

मासिंगा (2025) ने दक्षिण अफ्रीकी किशोरों के अनुवर्ती आँकड़ों में आत्म-प्रभावकारिता, आत्म-सम्मान, आत्म-नियमन, आकांक्षा और प्रदर्शन के संबंधों का अध्ययन किया। आत्म-अवधारणा के घटकों और शैक्षिक परिणामों में धनात्मक संबंध पाए गए, किंतु विद्यालयी संसाधन और संरचनात्मक असमानता ने इन संबंधों की वास्तविक परिणति को प्रभावित किया।

समेकित समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि आत्म-अवधारणा आकांक्षा को प्रेरक ऊर्जा, लक्ष्य की संभाव्यता और प्रयास की निरंतरता प्रदान करती है। फिर भी अधिकांश प्रत्यक्ष अध्ययन अन्य प्रदेशों या उच्च शिक्षा स्तर पर केंद्रित हैं। महासमुन्द जिले के कक्षा 9 के विद्यार्थियों के स्थानीय संदर्भ में अधिक व्यवस्थित अनुभवजन्य शोध की आवश्यकता बनी हुई है।

4. शोध समस्या

प्रस्तुत शोध की समस्या इस प्रकार निर्धारित की गई—“महासमुन्द जिले के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर आत्म-अवधारणा के प्रभाव का अध्ययन”।

5. शोध के उद्देश्य

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का वर्णन करना।
2. आत्म-अवधारणा एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना।
3. शैक्षिक आकांक्षा के पूर्वानुमान में आत्म-अवधारणा के सांख्यिकीय योगदान का परीक्षण करना।

6. शून्य परिकल्पना

शून्य परिकल्पना-1: कक्षा 9 के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक संबंध एवं पूर्वानुमानात्मक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

7. शोध-विधि

7.1 शोध उपागम एवं अभिकल्प

मात्रात्मक उपागम के अंतर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण, सहसंबंधात्मक तथा सरल पूर्वानुमानात्मक अभिकल्प अपनाया गया। यह विश्लेषण एक समय-बिंदु पर उपलब्ध आँकड़ों पर आधारित है।

7.2 संकेतित जनसंख्या

महासमुन्द जिले के शासकीय तथा अशासकीय उच्च विद्यालयों में कक्षा 9 में अध्ययनरत विद्यार्थी संकेतित जनसंख्या हैं। वर्तमान विश्लेषण में इस जनसंख्या से वास्तविक क्षेत्रीय नमूना चयन नहीं किया गया।

7.3 नमूना

कुल 100 विद्यार्थी-प्रविष्टियाँ सम्मिलित की गई—50 छात्र, 50 छात्राएँ; 50 शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी, 50 अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी तथा पाँच विकासखंडों से 20-20 प्रविष्टियाँ।

7.4 नमूना-चयन की प्रकृति

आँकड़ों में लिंग, विद्यालय-प्रकार और विकासखंड का संतुलित वितरण रखा गया। वास्तविक क्षेत्रीय शोध में विद्यालय-प्रकार, विकासखंड और लिंग के आधार पर स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना-चयन उपयुक्त होगा।

7.5 चर

पूर्वानुमानक चर—आत्म-अवधारणा; मानदंड चर—शैक्षिक आकांक्षा।

7.6 कार्यात्मक परिभाषाएँ

आत्म-अवधारणा प्राप्तांक 0 से 100 के स्तर पर विद्यार्थी की योग्यता, आत्म-मूल्य, सामाजिक स्वीकार्यता और सीखने की क्षमता के प्रति समेकित धारणा का सूचक है। शैक्षिक आकांक्षा प्राप्तांक भविष्य के अध्ययन-स्तर, लक्ष्य-प्रतिबद्धता और उच्च शिक्षा की इच्छा का सूचक है।

7.7 आँकड़ा-स्रोत और उपकरण

प्रदत्त कार्यपुस्तिका में उपलब्ध प्राप्तांकों का उपयोग किया गया। किसी वास्तविक विद्यार्थी-समूह पर मानकीकृत आत्म-अवधारणा अथवा शैक्षिक आकांक्षा मापनी लागू नहीं की गई।

7.8 विश्लेषण

आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, कार्ल पियर्सन सहसंबंध, सरल रैखिक प्रतिगमन, प्रसरण विश्लेषण तथा 95 प्रतिशत विश्वास-अंतराल का उपयोग किया गया।

8. आँकड़ा-विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: नमूने का वितरण

वर्गीकरण	समूह	संख्या	प्रतिशत
लिंग	छात्र	50	50.00
लिंग	छात्राएँ	50	50.00
विद्यालय प्रकार	शासकीय	50	50.00
विद्यालय प्रकार	अशासकीय	50	50.00
विकासखंड	महासमुन्द	20	20.00

वर्गीकरण	समूह	संख्या	प्रतिशत
विकासखंड	बागबाहरा	20	20.00
विकासखंड	पिथौरा	20	20.00
विकासखंड	बसना	20	20.00
विकासखंड	सरायपाली	20	20.00
कुल	—	100	100.00

नमूना लिंग, विद्यालय प्रकार और विकासखंड के आधार पर समान वितरण प्रदर्शित करता है। इसे जिले के वास्तविक नामांकन अनुपात का प्रतिनिधि नहीं माना गया है।

तालिका 2: आत्म-अवधारणा एवं शैक्षिक आकांक्षा के वर्णनात्मक आँकड़े

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मधिका	न्यूनतम	अधिकतम
आत्म-अवधारणा	100	67.48	8.28	69.00	44	88
शैक्षिक आकांक्षा	100	74.47	9.12	75.50	49	95

आत्म-अवधारणा का माध्य मध्यम स्तर के ऊपरी भाग में है। शैक्षिक आकांक्षा का माध्य 74.47 है, जो उच्च स्तर की सीमा के अत्यंत निकट है। आत्म-अवधारणा में प्रसरण शैक्षिक आकांक्षा की तुलना में थोड़ा कम है।

तालिका 3: स्तरवार आवृत्ति-वितरण

स्तर	आत्म-अवधारणा की आवृत्ति	प्रतिशत	शैक्षिक आकांक्षा की आवृत्ति	प्रतिशत
निम्न (50 से कम)	3	3.00	1	1.00
मध्यम (50 से 74)	79	79.00	45	45.00
उच्च (75 अथवा अधिक)	18	18.00	54	54.00

स्तर	आत्म-अवधारणा की आवृत्ति	प्रतिशत	शैक्षिक आकांक्षा की आवृत्ति	प्रतिशत
कुल	100	100.00	100	100.00

79 प्रतिशत विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा मध्यम श्रेणी में है, जबकि 54 प्रतिशत विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उच्च है। इससे ज्ञात होता है कि कुछ विद्यार्थी मध्यम आत्म-अवधारणा के बावजूद उच्च शैक्षिक लक्ष्य रखते हैं; अतः आकांक्षा को केवल एक मनोवैज्ञानिक चर के आधार पर नहीं समझा जा सकता।

तालिका 4: आत्म-अवधारणा एवं शैक्षिक आकांक्षा का सहसंबंध

चर-युग्म	संख्या	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर	संबंध की दिशा एवं मात्रा
आत्म-अवधारणा तथा शैक्षिक आकांक्षा	100	.729	.001 से कम	उच्च धनात्मक एवं सार्थक

.729 का सहसंबंध गुणांक दर्शाता है कि जिन विद्यार्थियों का आत्म-अवधारणा प्राप्तांक अधिक है, उनकी शैक्षिक आकांक्षा भी सामान्यतः अधिक है। संबंध अत्यंत सार्थक है, इसलिए शून्य परिकल्पना का संबंध-संबंधी भाग अस्वीकार किया गया।

तालिका 5: सरल प्रतिगमन प्रतिमान का सारांश

सहसंबंध गुणांक	निर्धारण गुणांक	समायोजित निर्धारण गुणांक	अनुमान की मानक त्रुटि	प्रसरण अनुपात	सार्थकता स्तर
.729	.532	.527	6.28	111.245	.001 से कम

आत्म-अवधारणा ने शैक्षिक आकांक्षा के प्रसरण का 53.16 प्रतिशत स्पष्ट किया। यह एकल पूर्वानुमानक प्रतिमान है; इसलिए इसके आधार पर कारणात्मक श्रेष्ठता का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

तालिका 6: प्रतिगमन का प्रसरण विश्लेषण

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता अंश	माध्य वर्ग	प्रसरण अनुपात	सार्थकता स्तर
प्रतिगमन	4381.275	1	4381.275	111.245	.001 से कम

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता अंश	माध्य वर्ग	प्रसरण अनुपात	सार्थकता स्तर
अवशेष	3859.635	98	39.384	—	—
कुल	8240.910	99	—	—	—

111.245 का प्रसरण अनुपात तथा .001 से कम सार्थकता स्तर यह स्पष्ट करता है कि प्रतिगमन प्रतिमान सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। आत्म-अवधारणा को प्रतिमान में सम्मिलित करने से शैक्षिक आकांक्षा का अनुमान केवल स्थिरांक वाले प्रतिमान की तुलना में उल्लेखनीय रूप से बेहतर हुआ।

तालिका 7: प्रतिगमन गुणांक

पद	प्रतिगमन गुणांक	मानक त्रुटि	परीक्षण मान	सार्थकता स्तर	95 प्रतिशत विश्वास-अंतराल
स्थिरांक	20.277	—	—	.001 से कम	—
आत्म-अवधारणा	.803	.076	10.547	.001 से कम	.652 से .954

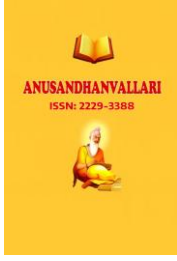
प्रतिगमन समीकरण इस प्रकार है—शैक्षिक आकांक्षा = $20.28 + .80 \times$ आत्म-अवधारणा। आत्म-अवधारणा में एक इकाई वृद्धि होने पर शैक्षिक आकांक्षा का अनुमानित प्राप्तांक औसतन .80 इकाई बढ़ता है। 95 प्रतिशत विश्वास-अंतराल में शून्य सम्मिलित नहीं है, जिससे गुणांक की सार्थकता पुष्ट होती है।

9. परिणामों की चर्चा

आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा के मध्य प्राप्त उच्च धनात्मक सहसंबंध इस विचार का समर्थन करता है कि विद्यार्थी का भविष्य-संबंधी लक्ष्य उसके वर्तमान आत्म-बोध से जुड़ा होता है। स्वयं को सक्षम, सीखने योग्य और प्रगति करने वाला मानने पर उच्च शिक्षा की कल्पना अधिक विश्वसनीय लगती है। नकारात्मक आत्म-अवधारणा में विद्यार्थी उपलब्ध अवसर को भी अपने लिए अनुपयुक्त समझ सकता है।

अहमवारा और ह्यूस्टन (2007) ने किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा में आत्म-अवधारणा और विद्यालयी संदर्भ की भूमिका स्पष्ट की। मार्श और मार्टिन (2011) का पारस्परिक प्रभाव प्रतिमान वर्तमान परिणाम की व्याख्या को अधिक संतुलित बनाता है। आत्म-अवधारणा केवल आकांक्षा या उपलब्धि को प्रभावित नहीं करती, बल्कि सफलता-असफलता के अनुभव से स्वयं भी बदलती है। इसलिए विद्यालय में सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित करने का अर्थ केवल प्रेरक भाषण देना नहीं, बल्कि वास्तविक सफल सीखने के अनुभव उपलब्ध कराना है।

बुचमान तथा अन्य (2022) के अनुवर्ती निष्कर्ष बताते हैं कि अभिभावकीय आकांक्षा और बालक की शैक्षिक आत्म-अवधारणा समय के साथ एक-दूसरे को प्रभावित कर सकती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आत्म-अवधारणा को केवल विद्यार्थी की निजी जिम्मेदारी मानना उचित नहीं है। परिवार, शिक्षक और विद्यालयी संरचना प्रतिदिन मिलने वाली प्रतिक्रिया के माध्यम से आत्म-धारणा का निर्माण करते हैं।



उपलब्ध आँकड़ों में 53.2 प्रतिशत निर्धारण गुणांक अत्यधिक मजबूत योगदान प्रदर्शित करता है, किंतु वास्तविक अनुभवजन्य अनुसंधान में इतनी मात्रा स्वतः अपेक्षित नहीं की जानी चाहिए। एकल प्रतिमान अन्य प्रभावों को नियंत्रित नहीं करता। मासिंगा (2025) ने भी स्पष्ट किया कि आत्म-प्रभावकारिता, आत्म-सम्मान और आत्म-नियमन महत्वपूर्ण होते हुए भी संरचनात्मक असमानता तथा विद्यालयी संसाधनों से प्रभावित होते हैं। अतः आत्म-अवधारणा-आधारित हस्तक्षेप को अवसर-समानता और शैक्षिक सहायता से जोड़ना आवश्यक है।

स्तरवार परिणाम में उच्च आत्म-अवधारणा वाले केवल 18 प्रतिशत विद्यार्थी थे, जबकि उच्च शैक्षिक आकांक्षा वाले 54 प्रतिशत थे। इसका अर्थ यह हो सकता है कि अनेक विद्यार्थी बड़े लक्ष्य तो रखते हैं, पर अपनी वर्तमान क्षमता के प्रति पूर्ण विश्वास विकसित नहीं कर पाए हैं। ऐसी स्थिति में आकांक्षा और आत्मविश्वास के बीच अंतर आगे चलकर निराशा या लक्ष्य-परित्याग का कारण बन सकता है। विद्यालय को आकांक्षा बढ़ाने के साथ कौशल, अध्ययन-रणनीति और प्रगति-आधारित आत्मविश्वास भी विकसित करना चाहिए।

10. निष्कर्ष

उपलब्ध आँकड़ों में आत्म-अवधारणा कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का उच्च धनात्मक तथा सार्थक पूर्वानुमानक पाई गई। विद्यार्थी स्वयं को जितना सक्षम, मूल्यवान और सीखने में समर्थ समझता है, उसके लिए उच्च शिक्षा का लक्ष्य उतना ही संभव और प्राप्त करने योग्य प्रतीत हो सकता है। शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुई। फिर भी आत्म-अवधारणा को एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता। वास्तविक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए मानकीकृत मापन, क्षेत्र से चयनित वास्तविक नमूना, अनुवर्ती अभिकल्प तथा पारिवारिक एवं विद्यालयी कारकों का नियंत्रण आवश्यक है।

11. शैक्षिक निहितार्थ

- शिक्षक विद्यार्थियों को सामान्य स्थायी विशेषण—कमजोर, औसत या प्रतिभाशाली—देने के स्थान पर कौशल-विशिष्ट और सुधारोन्मुख प्रतिक्रिया दें।
- कक्षा 9 में आत्म-अवधारणा, अध्ययन-कौशल और लक्ष्य-निर्धारण पर नियमित जीवन-कौशल सत्र संचालित किए जाएँ।
- विद्यार्थियों को छोटे, मापनीय और क्रमिक शैक्षिक लक्ष्य दिए जाएँ, ताकि सफलता के वास्तविक अनुभव से आत्मविश्वास विकसित हो।
- परामर्श कार्यक्रमों में नकारात्मक आत्म-संवाद, असफलता का भय, सामाजिक तुलना और सहायता माँगने की झिझक पर कार्य किया जाए।
- विद्यालयी मूल्यांकन में केवल अंतिम अंक के स्थान पर प्रयास, रणनीति, प्रगति, परियोजना और समस्या-समाधान को भी मान्यता दी जाए।
- छात्राओं, वंचित समूहों और प्रथम-पीढ़ी के शिक्षार्थियों को ऐसे आदर्श व्यक्तियों से परिचित कराया जाए जिनकी शैक्षिक यात्रा उनके सामाजिक संदर्भ से संबंधित हो।
- अभिभावकों को समझाया जाए कि बार-बार तुलना और स्थायी क्षमता-वर्गीकरण आत्म-अवधारणा को कमजोर कर सकते हैं; प्रयास और सीखने की प्रक्रिया की प्रशंसा अधिक उपयोगी है।
- उच्च आकांक्षा किंतु निम्न अथवा मध्यम आत्म-अवधारणा वाले विद्यार्थियों के लिए विषय-विशिष्ट मार्गदर्शन और शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराई जाए।

12. शोध की सीमाएँ

- उपलब्ध आँकड़े पद्धति-प्रदर्शन हेतु तैयार किए गए हैं और वास्तविक विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

- आत्म-अवधारणा एक बहुआयामी संरचना है, जबकि उपलब्ध आँकड़ों में केवल एक संयुक्त प्राप्तांक है।
- शैक्षिक आत्म-अवधारणा और सामान्य आत्म-अवधारणा को पृथक रूप से नहीं मापा गया।
- अनुप्रस्थ सहसंबंध दिशा और कारण का प्रमाण नहीं देता।
- पूर्व उपलब्धि, बुद्धि, परिवार, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शिक्षक-प्रतिक्रिया को नियंत्रित नहीं किया गया।

13. भावी शोध हेतु सुझाव

- वास्तविक नमूने में शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक और शारीरिक आत्म-अवधारणा के पृथक आयामों का परीक्षण किया जाए।
- कक्षा 9 से 12 तक अनुवर्ती शोध में आत्म-अवधारणा, आकांक्षा, उपलब्धि और वास्तविक पाठ्यक्रम-चयन के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया जाए।
- कम आत्म-अवधारणा वाले विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शनात्मक हस्तक्षेप का पूर्व-परीक्षण तथा पश्च-परीक्षण द्वारा प्रभाव जाँचा जाए।
- बहुस्तरीय प्रतिमान के माध्यम से विद्यार्थी-स्तरीय आत्म-अवधारणा और विद्यालय-स्तरीय वातावरण का एक साथ विश्लेषण किया जाए।

14. आँकड़ा-नैतिकता घोषणा

सभी विद्यार्थी संकेतांक, विद्यालय संकेतांक और प्राप्तांक पद्धति-प्रदर्शन हेतु तैयार किए गए हैं। इस दस्तावेज़ को वास्तविक क्षेत्रीय शोध के निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा। वास्तविक शोध में नाबालिग प्रतिभागियों के लिए अभिभावकीय सूचित सहमति, विद्यार्थी की सहमति, गोपनीयता, संस्थागत अनुमति तथा मनोवैज्ञानिक मापों के संवेदनशील उपयोग की व्यवस्था अनिवार्य है।

संदर्भ सूची:

- [1] अहमवारा, ए. एवं ह्यूस्टन, डी. एम. (2007)। चयनात्मक विद्यालयी व्यवस्था और आत्म-अवधारणा का किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव: ड्वेक के आत्म-सिद्धांत का परीक्षण। ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 77(3), 613–632।
- [2] बुचमान, एम., गुटर, जे. एवं जुफियानो, ए. (2022)। अभिभावकीय शैक्षिक आकांक्षा और बच्चों की शैक्षिक आत्म-अवधारणा: उनके गतिशील पारस्परिक संबंध में अवस्था एवं विशेषता घटकों का पृथक्करण। चाइल्ड डेवलपमेंट, 93(1), 7–24।
- [3] जिला प्रशासन महासमुन्द्र। (तिथि रहित)। शिक्षा विभाग। अभिगमन तिथि: 4 अगस्त 2026।
- [4] मार्श, एच. डब्ल्यू. एवं मार्टिन, ए. जे. (2011)। शैक्षिक आत्म-अवधारणा और शैक्षिक उपलब्धि: संबंध तथा कारणात्मक क्रम। ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 81(1), 59–77।
- [5] मासिंगा, एन. एम. (2025)। आकांक्षाओं की दिशा: विविध किशोरों के शैक्षिक प्रदर्शन को आकार देने में आत्म-अवधारणा की भूमिका। फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, 10, 1634375।
- [6] सरकार (बाल), पी. एवं मंडल, एस. (2024)। स्नातक विद्यार्थियों में आत्म-अवधारणा और शैक्षिक आकांक्षा के संबंध का आकलन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऑल रिसर्च एजुकेशन एंड साइंटिफिक मेथड्स, 12(7)।
- [7] सिंह, एन. के. एवं दुबे, एन. (2025)। स्नातक विद्यार्थियों में आत्म-अवधारणा और आकांक्षा-स्तर का संबंध। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 13(1), 2779–2784।